© 2020 | International Journal of Scientific Research in Science and Technology
IJSRST | Volume 7 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

"अभिप्रेरणा–सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

श्वेता तिवारी
शिक्षाशास्त्र
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
प्रयागराज

डॉ0 अमित कुमार साहनी
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र अपने प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध (माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन) में से शोध–पत्र हेतु अभिप्रेरणा चर का चयन कर उससे सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन का उद्देश्य अभिप्रेरणा क्या है, किसे कहते हैं और इससे सम्बन्धित किये गये शोध कार्य के निष्कर्ष की जानकारी हासिल करना है। जिससे अभिप्रेरणा (चर) के संदर्भ में सम्पूर्ण एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सके और ज्ञानार्जन कर अभिप्रेरणा क्षेत्र में क्या परिवर्तन लाये जा सकते हैं उस पर अध्ययन किया जा सके। प्रस्तुत शोध–पत्र में सम्बन्धित साहित्यों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं एवं शोध कार्यों आदि के विवरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द– माध्यमिक स्तर, अभिप्रेरणा, साहित्य सर्वेक्षण, विश्लेषणात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना–

मनुष्य एवं समाज का विकास शिक्षा द्वारा ही होता है क्योंकि शिक्षा ही ऐसा साधन है जो मानव और समाज तथा वातावरण के बीच समन्वय स्थापित करती है और साथ ही मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों को अभिप्रेरित कर विकास भी करती है एवं उसके ज्ञान में वृद्धि होती है चूँकि किसी अच्छे नियोजित शोध कार्य से पहले सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा अति आवश्यक है क्योंकि शोध कार्यों द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, सम्बन्धित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से शोध कार्य नही हो सकता। सम्बन्धित

साहित्य की समीक्षा से शोधार्थी अनुसंधान प्रक्रिया को समझता है कि अध्ययन किस प्रकार करना है। पूर्व में किये गये शोध की जानकारी मिलती है उनके द्वारा किये गये कार्यों से पूर्व परिचित हो जाता है एवं शोधार्थी को एक ही विषय को कई तरह से पड़ने हेतु उत्साहित व कुछ नया खोजने हेतु प्रेरित करता है और फिर शोधकर्ता उस विषय के क्षेत्र में किये गये कार्य, विधि, निष्कर्ष को समझ कर अपनी शोध समस्या का निर्धारण, रूपरेखा तैयार कर अपने उद्देश्यों को स्पष्ट व संक्षिप्त विश्लेषण कर सकता है। डब्ल्यू आर0 बोर्ग के अनुसार ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य को प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।''

अभिप्रेरणा–

यह एक आन्तरिक और बाह्य शक्ति है जो व्यक्ति के विशेष कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है जिसको व्यक्ति के व्यवहार प्रभावों का निरीक्षण या अवलोकन करके समझा जा सकता है चूँकि यह उत्साह या ऊर्जा करती है जिसके माध्यम से हम लक्ष्यों एवं कार्यों के निष्पादन के लिए अभिप्रेरित हो जाते हैं। आवश्यकता, अन्तर्वाद, प्रोत्साहन। अभिप्रेरक– ये अभिप्रेरणा के चार मुख्य संघटक होते हैं। रिली एवं लेविस के अनुसार अभिप्रेरणा एक ऐसा बल है जो व्यक्ति के अन्दर से उत्पन्न होता है न कि कोई ऐसी चीज जिसे शिक्षक छात्र में अपनी ओर से पैदा करते हैं। मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक जैसे उपलब्धि, संबंधन, अनुमोदन अभिप्रेरक जिन्हें अर्जित अभिप्रेरक कहा जाता है जिनसे बालकों में शक्ति एवं तत्परता उत्पन्न कर देते हैं। अभिप्रेरणा व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। साथ ही उनके व्यवहार में चयन करने की शक्ति भी प्रदान करने का कार्य करती है। अतः व्यक्ति के व्यवहार को संचालित, निर्देशित तथा संगठित करने वाली आन्तरिक एवं बाहरी शक्ति ही अभिप्रेरणा एवं अभिप्रेरक रूप में होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने 400 विद्यार्थियों पर अध्ययन करने का उद्देश्य रखा गया है जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिका है। जिसके अध्ययन हेतु शोधकर्त्री ने अपने प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध के अभिप्रेरणा (चर) हेतु निम्नलिखित सम्बन्धित साहित्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है–

जायसवाल (2007) ने कानपुर शहर के विभिन्न शैक्षिक परिषदों द्वारा संचालित विद्यालयों के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च अभिप्रेरणा स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता निम्न अभिप्रेरणा स्तर के विद्यार्थियों से अधिक पायी गई।

मौला, जे0एम0 (2010) ने 8वीं कक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं घरेलू वातावरण के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि माता–पिता का व्यवसाय, शिक्षा, परिवार की जनांकिकी आकार एवं घरेलू शैक्षिक सुविधा बच्चों के अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाते हैं।

गुप्ता, मधु देवी, ममता एवं पसरीजा, पूजा (2012) ने उपलब्धि अभिप्रेरणा : शैक्षिक उपलब्धि तय करने में एक महत्व कारक नामक विषय पर अध्ययन किया और निष्कर्ष पाया कि किशोरों में शैक्षिक उपलब्धि का निम्न और उच्च स्तर उनके लिंग, स्थानीयता और स्कूलों के प्रकार के अलावा प्रेरणा से भी सम्बन्धित है।

सुरेश, के0 (2015) ने 10वीं के विद्यार्थियों के अध्ययन, आदत, शैक्षिक उपलबिध अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आदत एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कुमावत, सुजीत धनराज (2017) ने जूनियर कॉलेज के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि विज्ञान संकाय की छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा छात्राओं की तुलना में अधिक है।

मनोविज्ञान, एन0सी0आर0टी0 किताब के अध्याय–9 अभिप्रेरणा एवं संवेग में अभिप्रेरणा को कुछ उदाहरण द्वारा बताया गया है कि मानव व्यवहार में अभिप्रेरणा की क्या भूमिका है, प्रत्येक व्यवहार का कारण कोई अभिप्रेरक है। व्यवहार लक्ष्य–निर्धारित होता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लोग विभिन्न कार्यों की योजना बनाते हैं और उनका क्रियान्वयन करते हैं एवं ये अध्याय द्वारा अभिप्रेरणा एवं संवेग के मूल संप्रत्ययों तथा इन दोनों क्षेत्रों से संबंधित विकास को समझने में सहायता प्रदान करता है। मनोसामाजिक अभिप्रेरकों के उदारहण, सम्बंधन की आवश्यकता, उपलब्धि की आवश्यकता, जिज्ञासा एवं अन्वेषण तथा शक्ति की आवश्यकता है।

किसी भी शोध साहित्य की समीक्षा का मुख्य उद्देश्य उसके अनछुहें विषय को ढूँढ़ना और उनके ऊपर कार्य करना है। समीक्षा करने से विषय की कमियाँ व अन्तर सामने आती है एवं शोध कार्य में नवीनता लाने हेतु दिशा दिखाती है।

इस तरह पूर्व में किये गये अनुसंधान वर्तमान शोध के लिए एक आधारशिला का कार्य करते हैं। सम्बन्धित साहित्य का भिन्न–भिन्न प्रकार से विश्लेषणात्मक अध्ययन कर ऐसे निष्कर्षों को उजागर करना है जिनकी वर्तमान या भविष्य में शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष–

इस प्रकार शोध कार्य हेतु विभिन्न साहित्यों के अध्ययन कर इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि किसी भी प्रकार की उपलब्धि पर व्यक्ति की रूचि, अभिप्रेरणा उसके अपने वातावरण, रहन–सहन आदि को प्रभावित करते हैं। अभिप्रेरक के रूप में समाज, विद्यालय, परिवार सबकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालकों में अभिप्रेरणा जितनी अधिक होगी शिक्षा प्रक्रिया भी उतनी ही सफल होगी चूँकि एक योग्य नागरिक के निर्माण में बालक–बालिका के अच्छे वातावरण अच्छी शिक्षा एवं अपने उद्देश्य के प्रति अभिप्रेरित करना अत्यन्त आवश्यक है जिससे विद्यार्थी अपने सही लक्ष्य को हासिल करें। अतः शोधकर्त्री ने अभिप्रेरणा (चर) के विश्लेषणात्मक अध्ययन बाद पाया कि निःसंदेह शैक्षिक प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है जो बालक को उद्देश्य के प्रति तत्परता, लक्ष्य उन्मुख, क्रियाशील बनाती है। शिक्षण प्रक्रिया ने शिक्षकों की वैज्ञानिक विधि द्वारा बालकों की शैक्षिक प्रगति को मापना चाहिए जिसमें सही दिशा–निर्देश एवं सुधार–सुझाव दिये जा सके क्योंकि विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा जितनी अधिक और धनात्मक होगी, शिक्षा प्रक्रिया भी उतनी सफल होगी।

संदर्भ सूची–

1. पारसनाथ राय, सी0पी0 राय, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
2. गुप्ता, एसपी0, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. शैक्षिक अनुसंधान प्रणाली एवं सांख्यिकी, एल0पी0यू0।
4 सोनाली तिवारी, ग्लोबल जर्नल फॉर रिसर्च एनालिसिस।
5. जर्नल्स ऑफ एजुकेशनल टेक्निकल एजूकेशन, 2010
6. www.researchgate.net.
7. www.socialsciencestatstics.com
8. www.shodh.net
9. www.shodhganga.com
10. www.hindijournal.com
11. http://ncert.in>kphy109